M.A.Part-I
and
M.A.Part-II,2013
} Hindi

Prospectus No. 2013118

संत गाडगे बाबा अमरावती विद्यापीठ

SANT GADGE BABA AMRAVATI UNIVERSITY

वाङ्मय विद्याशाखा

(FACULTY OF ARTS)

अभ्यासक्रमिका

वाङ्मय पारंगत परीक्षा

भाग-१,

एवं

भाग-२, २०१३

PROSPECTUS

OF
M.A. Examination Part-I
and
Part-II of 2013
for
HINDI

2012

(Price Rs. /-)

PUBLISHED BY
Dineshkumar Joshi
Registrar
SANT GADGE BABA
AMRAVATI UNIVERSITY
AMRAVATI- 444 602

© 'या अभ्यासक्रमिकेतील (Prospectus) कोणताही भाग संत गाडगे बाबा अमरावती विद्यापीठाच्या पूर्वानुमती शिवाय कोणासही पुर्नमुद्रित किंवा प्रकाशित करता येणार नाही'

© "No part of this prospectus can be reprinted or published without specific permission of Sant Gadge Baba Amravati University."

INDEX

Sr. No.	Subject	Page No.
1.	Special Note for information of the Students	1
2.	Ordinanace No. 36	3 to 10
3.	Ordinance No. 138	11 to 13
4.	**एम.ए. हिन्दी (भाग-१)**	
	प्रश्नपत्र १	
	प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य ————	14 to 15
	प्रश्नपत्र - २	
	हिन्दी साहित्य का इतिहास ————	16 to 17
	प्रश्नपत्र - ३	
	काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन ————	17 to 18
	प्रश्नपत्र - ४	
	विशेष अध्ययन : (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)	
	(अ) : प्रेमचंद	19
	(आ) : जयशंकर प्रसाद	20 to 21
	(इ) प्रयोजनमूलक हिन्दी	21 to 22
	(ई) दृष्य-श्रव्य माध्यम लेखन	23 to 26
5.	**एम.ए.हिन्दी द्वितीय वर्ष**	
	प्रश्नपत्र - १ आधुनिक काव्य	27 to 28
	प्रश्न पत्र - २ आधुनिक गद्य साहित्य	29 to 30
	प्रश्नपत्र - ३ भाषाविज्ञान एवं हिन्दी भाषा	30 to 32
	प्रश्नपत्र - ४ निबंध / परियोजना	33 to 35

SANT GADGE BABA AMRAVATI UNIVERSITY

SPECIAL NOTE FOR INFORMATION OF THE STUDENTS

(1) Notwithstanding anything to the contrary, it is notified for general information and guidance of all concerned that a person, who has passed the qualifying examination and is eligible for admission only to the corresponding next higher examination as an ex-student or an external candidate, shall be examined in accordance with the syllabus of such next higher examination in force at the time of such examination in such subjects papers or combination of papers in which students from University Departments or Colleges are to be examined by the University.

(2) Be it known to all the students desirous to take examination/s for which this prospectus has been prescribed should, if found necessary for any other information regarding examinations etc., refer the University Ordinances Booklet the various conditions/ provisions pertaining to examinations as prescribed in the following Ordinances -

Ordinances No.1	:	Enrolment of Students.
Ordinances No.2	:	Admission of Students
Ordinances No.4	:	National Cadet Corps
Ordinances No.6	:	Examination in General (relevant extracts)
Ordinance No. 9	:	Conduct of Examinations (Relevant Extracts)
Ordinance No. 18/2001	:	An Ordinance to provide grace Marks for passing in a Head of passing and Improvement of Division (Higher Class) and getting Distinction in the subject and condonation of deficiency of Marks in a subject in all the faculties prescribed by the statute no. 18 Ordinance, 2001
Ordinance no.10	:	Providing for Exemptions and Compartments.
Ordinance No.19	:	Admission of Candidates to Degrees
Ordinance No.109	:	Recording of a change of name of a University Student in the records of the University.
Ordinance No. 138	:	For improvement of Division / 6 of 2008

Ordinance No.6/2008	:	For improvement of Division.
Ordinance No.19/2001	:	An Ordinance for Central Assessment Programme, Scheme of Evaluation and Moderation of answerbooks and preparation of results of the examinations, conducted by the University, Ordinance 2001.

Dineshkumar Joshi
Registrar
Sant Gadge Baba Amravati University.

PATTERN OF QUESTION PAPER ON THE UNIT SYSTEM.

The pattern of question paper as per unit system will be broadly based on the following pattern

(1) Syllabus has been divided into units equal to the number of question to be answered in the paper. On each unit there will be a question either a long answer type or a short answer type.

(2) Number of question will be in accordance with the unit prescribed in the syllabi for each paper i.e. there will be one question on each unit.

(3) For every question long answer type or short answer type there will be an alternative choice from the same unit. However, there will be no internal choice in a question.

(4) Division of marks between long answer and short answer type question will be in the ratio of 40 and 60

(5) Each short answer type question shall contain 4 to 8 short sub question with no internal choice.

एम.ए. हिन्दी (भाग-१)

प्रश्नपत्र १

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

प्रस्तावना -

हिन्दी के आदिकालीन काव्य अपनी पृष्ठभूमि में अपभ्रंश के अवदान को पूरी तरह समेटे हुए हैं। प्रबंध, मुक्तक आदि काव्यरुपों में रचित और अपभ्रंश अवहट्ट एवं देशी भाषा में अभिव्यंजित आदिकालीन साहित्य कीपरवर्ती कालों को प्रभावित करने में सक्रिय एवं सक्षम भूमिका रही है। इसके अध्ययन के बिना किसी भी काल का वास्तविक मूल्यांकन संभव नहीं है। पूर्वमध्यकालीन (भक्तिकालीन) काव्य लोक-जागरण और लोकमंगल का नवीन स्वर लेकर आया। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परंपरा को सुरक्षित रखा है। उत्तरमध्यकालीन (रीतिकाल) काव्य अपनी कलात्मक अभिव्यंजना में बेजोड है । इनका अध्ययन समाज, संस्कृति और युग की धडकनों को समग्रता मे समझने के लिए अनिवार्य है।

पाठ्यविषय - व्याख्या एवं विवेचना के लिए निम्नांकित ६ कवियों का अध्ययन किया जायेगा।

(क)
१. विद्यापति : विद्यापति पदावली संपा. सूर्यबलींसिंह (आरंभ के २५ पद)
२. कबीर : कबीर ग्रंथावली, संपा. डॉ.श्यामसुंदर दास (गुरुदेव को अंग, विरह को अंग, मन को अंग काल को अंग, भेष को अंग,) प्रत्येक अंग से प्रारंभिक २० साखियॉ इस प्रकार कुल १०० साखियॉ एवं पद संख्या ११३ से १३७ कुल २५ पद
३. जायसी : पद्‌भावत संपा. आचार्य रामचंद्र शुक्ल (मानसरोदक खन्ड, नागमति वियोग खन्ड)
४. सूरदास : भ्रमरगीत सार, संपा. आचार्य रामचंद्र शुक्ल (५० से १०० पद)
५. तुलसीदास : रामचरितमानस (गीता प्रेस, गोरखपुर) (सुंदरकांड)
६. बिहारीलाल : बिहारी रत्नाकर, संपा. जगन्नाथदास रत्नाकर (प्रथम १०० दोहे)

(ख) द्रुतपाठ के लिए निम्नांकित दस कवियों का अध्ययन किया जायेगा ।
१. अमीर खुसरो
२. मीरॉ बाई
३. रैदास

४. रहीम
५. रसखान
६. केशव
७. नामदेव
८. भूषण
९. देव
१०. गुरु गोविंद सिंह

अंक विभाजन

३.	व्याख्याएँ : ३ X १०	=	३० अंक
२.	आलोचनात्मक प्रश्न : २ X १५	=	३० अंक
५.	लघूत्तरी प्रश्न : ५ X ४	=	२० अंक
२०	अति लघूत्तरी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न : २० X १	=	२० अंक
	कुल		१०० अंक

प्रश्न - १ 'क' विभाग के प्रत्येक कविकी कृति से १-१ व्याख्या इस प्रकार कुल छ. व्याख्याएँ पूछी जायेगी । जिनमें से ३ व्याख्याएँ करना अनिवार्य होगी । प्रत्येक व्याख्यापर १० अंक निर्धारित है । ३ X १० = ३० अंक

प्रश्न २. 'क' विभाग के कवियोंपर ४ आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमे से २ प्रश्न हल करने होंगे I प्रत्येक प्रश्न १५ अंक का होगा ।

२ X १५ = ३० अंक

प्रश्न ३. 'ख' विभाग के प्रत्येक कविपर १-१ लघूत्तरी प्रश्न इसप्रकार कुल १० प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से ५ प्रश्न हल करने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए ४ अंक निर्धारित है। ५ X ४ = २० अंक

प्रश्न ४ संपूर्ण पाठ्यक्रम से २० अतिलघूत्तरी / वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जायेंगे । प्रत्येक प्रश्न के लिए १ अंक होगा । २० X १ = २०

*****

एम.ए.हिन्दी (भाग-१)

प्रश्नपत्र - २

हिन्दी साहित्य का इतिहास

प्रस्तावना –

किसी भी देश के जनमानस की मनोवृत्ति दशा एवं संवेदना के विविध स्वरुपों का संचित रुप वहाँ के साहित्य में परिलक्षित होता है । सामाजिक , राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्न परिस्थितियों के कारण चित्तवृत्तियों में परिवर्तन होता है । फलतः साहित्यिक रुपों में भी बदलाव आ जाता है । इस बदली हुई विकास प्रक्रिया को साहित्य के इतिहास के माध्यम से ही देखा-परखा जा सकता है । हिन्दी क्षेत्र की परिस्थितियों सें कमोवेश पूरा भारत प्रभावित होता रहा है. जिसकी गुंज हिन्दी साहित्य में प्रतिध्वनित है । आठवीं-नवीं शताब्दी से लेकर आज तक के विकास परिदृश्य के साथ साहित्यिक सृजनशीलता के विविध रुपों प्रवृत्तियों और भाषा-शैलियों का ज्ञान हिन्दी साहित्य के इतिहास के माध्यम से ही किया जा सकता है । अतः इसका अध्ययन सर्वथा सार्थक एवं समीचीन है ।

पाठ्यविषय

- इतिहास-दर्शन और साहित्येतिहास ।
- हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा आधारभूत सामग्री और साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएँ ।
- हिन्दी साहित्य का इतिहास : काल-विभाजन सीमा-निर्धारण और नामकरण । प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएँ ।
- आदीकाल की पृष्ठभूमी सिध्द और नाथ साहित्य रासो काव्य, जैन काव्य
- पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) की एतिहासिक पृष्ठभूमि सांस्कृतिक
- चेतना एवं भक्ति आंदोलन विभिन्न काव्यधाराएँ। तथा उनका वैशिष्ट्य
- प्रमुख निर्गुण संत कवि और उनका अवदान।
- भारत में सूफी मत का विकास तथा प्रमुख सूफी कवि और काव्यग्रंथ, सूफी काव्य मे भारतीय संस्कृति एवं लोकजीवन के तत्व।
- राम और कृष्ण काव्य, रामकृष्ण काव्येत्तर काव्य, भक्तीतर काव्य, प्रमुख कवि और उनका रचनागत वैशिष्ट्य । भक्तिकालीन गद्य-साहित्य।
- उत्तरमध्यकाल (रीतिकाल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि काल-सीमा और नामकरण, दरबारी, संस्कृति और लक्षण-ग्रंथों की परंपरा, रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराएँ (रीतिबद्व,रितिसिद्व और रीतिमुक्त) प्रवृत्तियों और विशेषताएँ, प्रतिनिधि रचनाकार और रचनाएँ । रीतिकालीन गद्य साहित्य ।
- आधुनिककाल की सामाजिक,राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि सन १८५७ इं. की राजक्रांति और पुनर्जागरण ।

- भारतेंदु युग : प्रमुख साहित्यकार रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।
- द्विवेदी युग : प्रमुख साहित्यकार रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।
- हिन्दी स्वच्छंदतावादी चेतना का अग्रिम विकास, छायावादी काव्य, प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ ।
- उत्तरछायावादी काव्य की विविध प्रवृत्तियॉ
- प्रगतिवाद प्रयोगवाद नयी कविता, नवगीत, समकालीन कविता। प्रमुख साहित्यकार रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ ।
- हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाएँ (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी आत्मकथा, रिपोर्ताज आदि) का विकास।
- हिन्दी आलोचना का उद्‌भव और विकास।
- उर्दु साहित्य का संक्षिप्त परिचय।

अंक विभाजन :

४ आलोचनात्मक प्रश्न ४ X १५ - ६० अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न ५ X ४ - २० अंक

२० वस्तुनिष्ठ/ अति लघूत्तरी प्रश्न २० X १ - २० अंक

****

एम.ए.हिन्दी (भाग-१)

प्रश्नपत्र - ३

काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

प्रस्तावना :

रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्‌घाटन के लिए काव्यशास्त्र और साहित्यलोचन का ज्ञान अपरिहार्य है। इनसे साहित्यिक समझ विकसित होती है। वह दृष्टि मिलती है, जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्यवत्ता की वास्तविक परख की जा सके। सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद प्राप्त करने, रचना को उसकी समग्रता में समझने और जॉचने-परखने के लिए भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी के निजी साहित्यालोचन का अध्ययन समीचीन है।

पाठ्यविषय

(क) संस्कृत काव्यशास्त्र : काव्य-लक्षण,काव्य-हेतु, काव्य-प्रयोजन,काव्य के प्रकार ।

- रस सिध्दांत : रस का स्वरुप, रस-निष्पति, रस के अंग, साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा।
- अंलकार सिध्दांत : मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण।

– रीति सिध्दांत : रीति की अवधारणा, काव्य-गुण, रीति एवं शैली, रीति सिध्दांत की प्रमुख स्थापनाएँ।

– वक्रोक्ति-सिध्दांत : वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद।

– ध्वनि-सिध्दांत : ध्वनि का स्वरुप, ध्वनि-सिध्दांत की प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद, गुणीभूत-व्यंग्य, चित्र-काव्य।

– औचित्य-सिध्दांत : प्रमुख स्थापनाएँ औचित्य के भेद।

(ख) पाश्चात्य काव्यशास्त्र

– प्लेटो : काव्य-सिध्दांत।

– अरस्तू : अनुकरण-सिध्दांत, त्रासदी-विवेचन।

– लोंजाइनस : उदात्त की अवधारणा ।

– वर्ड्सवर्थ : काव्य-भाषा का सिध्दांत।

– मैथ्यू आर्नल्ड : आलोचना का स्वरुप और प्रकार्य।

– टी.एस.इलियट : परंपरा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा निर्वेयक्तिकता का सिध्दांत, वस्तुनिष्ठ समीकरण, संवेदनशीलता का असाहचर्य।

(ग) सिध्दांत और वाद : अभिजात्यवाद, स्वच्छंदत्तावाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषण तथा अस्तित्ववाद।

– आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियॉ : संरचनावाद, शैलीविज्ञान, विखंडनवाद, उत्तर-आधुनिकतावाद।

– हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियॉ :

– शास्त्रीय, व्यक्तिवादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रभाववादी, मनोविश्लेषणवादी, सौंदर्यशास्त्रीय, शैलीवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय।

(घ) व्यावहारिक समीक्षा : प्रश्नपत्र में पूछे गए किसी गद्यांश/पद्यांश की स्वविवेक के अनुसार समीक्षा।

अंक विभाजन

संस्कृत काव्यशास्त्र १ आलोचनात्मक प्रश्न :	१ X १५ = १५ अंक
पाश्चात्य काव्यशास्त्र १ आलोचनात्मक प्रश्न	१ X १५ = १५ अंक
(ग अ द्य) १ आलोचनात्मक प्रश्न	१ X १५ = १५ अंक
५ (गद्यांश एवं पद्यांश) व्यावहारिक समीक्षा	= १५ अंक
५ लघूत्तरी प्रश्न	५ X ४ = २० अंक
२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न	२० X १ = २० अंक

*****

एम.ए.हिन्दी (भाग-१)

प्रश्नपत्र - ४

विशेष अध्ययन : (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)

(अ) : प्रेमचंद

प्रस्तावना -

हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रेमचंद का विशेषस्थान है। अतः उनका अध्ययन हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों के लिये विशेष महत्व रखता है । प्रेमचंद ने बहुविध लेखन किया है । परंतु कथाकार के रुप में उनकी विशेष ख्याति है । अतः विशेष अध्ययन में उनके इसी रुप को अधिक महत्व दिया गया है । उनके समग्र व्यक्तित्व-कृतित्व का सधन अध्ययन अपेक्षित है।

पाठ्यविषय –

उपन्यास – रंगभूमि, कर्मभूमि, निर्मला और गोदान।

कहानी – कफन, पूस की रात, शतरंज के खिलाडी, नशा., सवाशेरगेहूँ, सद्गति, ठाकुर का कूऑ , ईदगाह्, दो बैलों की कथा, पंच परमेश्वर, बडे घर की बेटी।

निबंध संग्रह – साहित्य का उद्देश्य - प्रकाशक : हंस प्रकाशन

अंक विभाजन

३. व्याख्याएँ	३ X १० = ३० अंक
२. आलोचनात्मक प्रश्न	२ X १५ = ३० अंक
५. लघूत्तरी प्रश्न	५ X ४ = २० अंक
२० वस्तुनिष्ठ/ अति लघूत्तरी प्रश्न	२० X १ = २० अंक

प्रश्नपत्र का स्वरुप

प्रश्न -१- रंगभूमि, कर्मभूमि और, गोदान प्रत्येक उपन्यास से एक व्याख्या विकल्प के साथ होगी । कुल तीन व्याख्याएँ ३ X १० = ३० अंक ।

प्रश्न -२- चारों उपन्यासों पर चार आलोचनात्मक प्रश्न (प्रत्येक उपन्यास पर एक प्रश्न) होंगे । जिसमें से दो प्रश्न हल करने होंगे । अंक २ X १५ = ३० अंक ।

प्रश्न -३- कहानियों एवं निबंध पर आधारित दस लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे । जिनमें से पॉच प्रश्न हल करने होंगे। प्रत्येक प्रश्न चार अंको का होगा । कुल अंक ५ X ४ = २० अंक ।

प्रश्न-४- संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित २० अतिलघूत्तरी / वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे । कुल अंक २० X १ = २० अंक।

*****

एम.ए.(हिंन्दी) भाग-१
प्रश्न पत्र - ४
विशेष अध्ययन (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)
(आ) : जयशंकर प्रसाद

प्रस्तावना -

छायावाद समस्त विकास प्रक्रिया को समेटते हुए नई- नई भावभूमि और नए-नए रुप विन्यास देने में मील का पत्थर सिद्ध हुआ। स्थूल इतिवृतात्मकता की जगह सूक्ष्मता, तथ्य की जगह विराट कल्पना, सामाजिक बोध की जगह व्यक्तित्व की स्वाधीनता, प्रकृति - साहचर्य, मानव-प्रेम, वैयक्तिक-प्रेम, उच्च-नैतिक-आदर्श, देशभक्ति, राष्ट्रीय स्वाधीनता एवं सांस्कृतिक जागरण का स्वर लेकर जयशंकर प्रसाद का हिन्दी साहित्य में अवतरण हुआ । अतः प्रसाद का अध्ययन मनन अति प्रासंगिक एवं अनिवार्य प्रतीत होता है । इसी उद्देश्य को लेकर उनके कवि, नाटककार, कहानीकार एवं निबंधकार (विचारक) रुप से परिचित कराना यहॉ आवश्यक समझा गया है।

पाठ्य विषय -

१. काव्य - ऑसू, लहर एवं कामायनी ।

२. नाटक - चंद्रगुप्त ।

३ उपन्यास - कंकाल ।

४. कहानियॉ - पुरस्कार, आकाशदीप, गुंडा, सालवती, देवरथ, ऑधी, प्रतिध्वनि, ममता, मधुआ, नशा, एवं छोटा जादूगर ।

५. निबंध - काव्य कला एवं अन्य निबंध

अंक विभाजन –

३ व्याख्याएँ ३ X १० = ३० अंक

२ आलोचनात्मक प्रश्न २ X १५ = ३० अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न ५ X ४ = २० अंक

२० वस्तुनिष्ठ/ अति लघूत्तरी प्रश्न २० X १ = २० अंक

प्रश्नपत्र का स्वरुप -

प्रश्न - १ - ऑसू, लहर एवं कामायनी में से एक - एक पद्यांश संदर्भ सहित व्याख्या के लिये विकल्प के साथ पूछे जाएंगे । प्रत्येक व्याख्या पर १० अंक होंगे । कुल अंक ३ X १० = ३० अंक।

प्रश्न -२- काव्य, नाटक, उपन्यास, एवं निबंध की निर्धारित पाठ्य पुस्तकों पर चार

आलोचनात्मक प्रश्न होंगे । प्रत्येक विधा से एक प्रश्न पूछा जाएगा । इन चार प्रश्नों में से दो प्रश्न हल करने होंगे। कुल अंक २ X १५ = ३० अंक।

प्रश्न -३- कहानियों पर आधारित दस लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। दस में से पॉच प्रश्न करने होंगे। प्रत्येक प्रश्न ४ अंको का होगा । कुल अंक ५ X ४ = २० अंक।

प्रश्न -४- संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित २० अतिलघूत्तरी / वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे । कुल अंक २० X १ = २० अंक ।

*****

एम.ए. हिन्दी (भाग-१)
प्रश्नपत्र - ४ (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)
(इ) प्रयोजनमूलक हिन्दी

खण्ड - । कामकाजी हिन्दी

१. हिन्दी के विभिन्न रुप - सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राजभाषा, माध्यम भाषा, मातृभाषा ।

२. कार्यालयीन हिन्दी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार्य : प्रारुपण पत्र- लेखन, संक्षेपण, पल्लवन, टिप्पण ।

३. पारिभाषिक शब्दावली - स्वरुप एवं महत्व, पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के सिध्दांत ।

४. ज्ञान विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली (निर्धारित शब्द)

खंण्ड २ - हिन्दी कम्प्यूटिंग :-

१. कंप्यूटर : परिचय, रुपरेखा, उपयोग, तथा क्षेत्र, वेब पब्लिशिंग का परिचय ।

२. इंटरनेट : संपर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख-रखाव एवं इंटरनेट समय मितव्ययिता के सूत्र

३. वेब पब्लिशिंग

४. इंटर एक्सप्लोइट अथवा नेट स्केप

५. लिंक, ब्राऊजिंग ई-मेल भेजना। प्राप्त करना, हिन्दी के प्रमुख इंटरनेट पोर्टल, डाऊनलोडिंग, अपलोडिंग, हिन्दी सॉप्टवेअर, पॅकेज।

खंण्ड ३ पत्रकारिता :-

१. पत्रकारिता स्वरुप एवं विभिन्न प्रकार

२. हिन्दी पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास

३. समाचार लेखन कला

४. संपादन के आधारभूत तत्व

५. व्यावहारिक प्रूफ शोधन

६. शीर्षक की संरचना लीड इंट्रो एवं शीर्षक - संपादन

७. संपादकीय - लेखन

८. पृष्ठ - सज्जा

९. साक्षात्कार, पत्रकार वार्ता एवं प्रेस प्रबंधन

१०. प्रमुख प्रेस कानून एवं आचार संहिता

खंण्ड ४ - मीडिया लेखन :-

१. जनसंचार : प्रौद्योगिकी एवं चुनौतियॉ

२. विभिन्न जनसंचार माध्यमों का स्वरुप - मुद्रण- श्रव्य, दृश्य श्रव्य, इंटरनेट।

३. श्रव्य माध्यम (रेडियो) मैखिक भाषा की प्रकृति । समाचार लेखन एवं वाचन । रेडियो नाटक । उद्घोषणा लेखन । विज्ञापन लेखन, फीचर तथा रिपोर्ताज।

४. दृश्य - श्रव्य माध्यम । फिल्म, टेलीविजन, एवं वीडियो । दृश्य माध्यमों मे भाषा की प्रकृति । दृश्य एवं श्रव्य सामग्री का सामंजस्य। पार्श्व वाचन (वायस ओवर)। पटकथा लेखन। टीवी ड्रामा। डॉक्यू ड्रामा, संवाद लेखन । साहित्य की विधाओ का दृश्य माध्यमों मे रुपांतरण । विज्ञापन की भाषा।

५. इंटरनेट : सामग्री सृजन (Content Creation)

खण्ड ५ : अनुवाद : सिध्दांत एवं व्यवहार

– अनुवाद का स्वरुप, क्षेत्र प्रक्रिया एवं प्रविधि

– हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका

– कार्यालयी हिन्दी और अनुवाद

– जनसंचार माध्यमों का अनुवाद

विज्ञापन मे अनुवाद

– अंक विभाजन 4 x 15 = 60 अंक

४ आलोचनात्मक प्रश्न (प्रत्येक खंडसे एक एक)

५ लघूत्तरी प्रश्न 5 x 4 = 20 अंक

२० वस्तुनिष्ठ / अतिलघूत्तरी प्रश्न 20 x 1 = 20 अंक

*****

एम.ए. हिन्दी (भाग-१)

प्रश्नपत्र -४ (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)

(ई) दृष्य-श्रव्य माध्यम लेखन

सूचना : यह प्रश्नपत्र केवल महाविद्यालय के नियमित छात्रों के लिये ही होगा ?

प्रस्तावना :

वर्तमान युग में विश्व का स्वरुप लघूत्तर होता जा रहा है । दृक-श्रव्य माध्यम द्वारा भूमंडलीकरण के इस दौर में हम सब निकट आ रहे है। आज जीवन गतिशील है और इस गति को और तीव्र किया है । सूचना और प्राद्योगिकीकरण की क्रांति ने । आज हमें सूचनाएँ इतनी गति से मिल रही हैं कि जीवन में कुछ भी अनजाना नहीं रहा । इस क्रांति में सर्वप्रमुख है दृश्य-श्रव्य माध्यम, जो घर-घर में उपलब्ध है । इन माध्यमों की प्रकृत्ति एवं प्रवृत्ति को जानना वर्तमान युग में अत्यंत आवश्यक है । क्योकि ये माध्यम हमारे जीवन के अभिन्न अंग बन गए हैं । इस बात को नकारा नहीं जा सकता । इस प्रश्नपत्र में इन माध्यमों को निकट से जानने का उद्देश तो है, साथही इन माध्यमों का मानवीय जीवन पर जो प्रभाव हो रहा है उसपर भी चिन्तन करना अपेक्षित है।

पाठ्यविषय

– माध्यमोपयोगी लेखन का स्वरुप और प्रमुख प्रकार।

– हिन्दी माध्यम लेखन का संक्षिप्त इतिहास।

– रेडियो नाटक की प्रविधि।

– रंग नाटक, पाठ्यनाटक और रेडियो नाटक का अंतर।

– रेडियो नाटक के प्रमुख भेद :-

- रेडिओ धारावाहिक, रेडियो रुपांतर रेडियो फैन्टेसी संगीत रुपक आलेख रुपक (डाक्यूमेट्री फीचर)।

– टी.वी.नाटक की तकनीक। टेली ड्रामा टेली फिल्म, डाक्यूड्रामा तथा टी.वी. धारावाहिक में साम्य-वैषम्य । संचार माध्यम के अन्य विविध रुप।

– साहित्यिक विधाओं की दृश्य-श्रव्य रुपांतरण-कला। इलैक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा प्रसारित समाचारो के संकलन-संपादन और प्रस्तुतीकरण की प्रविधि।

– संचार माध्यमों द्वारा प्रसारित विज्ञापनों की भाषा।

– विज्ञापन फिल्मों की प्रविधि।

– संचार माध्यमों की भाषा।

– हिन्दी के समक्ष आधुनिक जनसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी की चुनोतियॉ।

अंक विभाजन :

३ आलोचनात्मक प्रश्न :	3 x 15 - 45 अंक
५ लघूत्तरी प्रश्न	5 x 4 - 20 अंक
१५ वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न	15 x 1 - 15 अंक
प्रायोगिक कार्य - (माध्यमोपयोगी लेखन) -	२० अंक

उपर्युक्त सभी प्रश्न पत्रोंके लियें संदर्भ ग्रंथ -

१. काव्य में अभिव्यंजनावाद - लक्ष्मीनारायण सुधांशु
२. विद्यापति की काव्य प्रतिभा - डॉ.गोविंदराव शर्मा
३. विद्यापति युग और साहित्य - डॉ अरविंद नारायण सिंह
४. विद्यापति और उनका काव्य - डॉ.शुभकार कपूर
५. महाकवि जायसी और उनका काव्य - डॉ.इकबाल अहमद
६. मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य - डॉ.शिवसहाय पाठक
७. जायसी का पद्‌मावत काव्य और दर्शन - डॉ.गोविंद त्रिगुणायत
८. पदमावत में काव्य संस्कृति और दर्शन - डॉ.द्वारिका प्रसाद सक्सेना
९. कबीर एक अनुशीलन - डॉ.रामकुमार वर्मा
१०. कबीर की विचारधारा - डॉ.गोविंद त्रिगुणायत
११. युगपुरुष कबीर - डॉ.रामचंद वर्मा
१२. कबीर - संपादक डॉ.विजयेन्द्र स्नातक
१३. सूरदास और उनका साहित्य - डॉ.मुंशीराम शर्मा
१४. सूरकी काव्य कला - डॉ.मनमोहन गौतम
१५. सूरदास एक पुनरावलोकन - डॉ.ओमप्रकाश शर्मा
१६. भ्रमरगीत का काव्य सौदर्य - डॉ.सत्येन्द्र पारीक
१७. भ्रमरगीत : एक अन्वेबन - डॉ.सत्येन्द्र
१८. बिहारी काव्य का मूल्यांकन - डॉ.किशोरीलाल
१९. धनानंद और स्वच्छंद काव्य धारा - डॉ.मनोहरलाल गौड
२०. गोस्वामी तुलसीदास - आचार्य रामचंद शुक्ल
२१. तुलसी दर्शन - डॉ.बलदेव प्रसाद मिश्र
२२. तुलसीदास का युग और काव्य : डॉ.राजपति दीक्षित
२३. प्रेमचंद एक अध्ययन - डॉ.राजेश्वर गुरु
२४. समस्यामूलक उपन्यासकार - डॉ.महेन्द्र भटनागर
२५. प्रसादोत्तर नाटक एवं लक्ष्मीनारायण मिश्र – डॉ.विकल गौतम
२६. काव्य शास्त्र - डॉ.भगीरथ मिश्र
२७. भारतीय काव्य शास्त्र के सिध्दांत - डॉ. कृष्णदेव झारी
२८. अरस्तू का काव्य शास्त्र - डॉ.नगेन्ड
२९. पाश्चात्य काव्य शास्त्र - डॉ.भगिरथमिश्र
३०. पाश्चात्य काव्य शास्त्र के सिध्दांत - डॉ.कृष्णदेव शर्मा

३१. नयी समीक्षा के प्रतिमान - डॉ.निर्मला जैन
३२. हिन्दी नाटक रंग शिल्प दर्शन - डॉ.विकल गौतम
३३. आधुनिक समीक्षा - डॉ.भगवत स्वरुप मिश्र
३४. आलोचना के बदलते मानदंड और हिन्दी साहित्य - डॉ.शिवचरण सिंह
३५. हिन्दी नाटक सिध्दांत और विवेचन - गिरीश रस्तोगी
३६. हिन्दी नाटककार - जयनाथ नलिन
३७. नाटक और रंगमंच की भूमिका - डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल
३८. हिन्दी उपन्यास उद्‌भव और विकास - सुरेश सिन्हा
३९. प्रेमचदोत्तर उपन्यासों की शिल्पविधि - डॉ.सत्यपाल चूघ
४०. आधुनिक उपन्यास : विविध आयाम - विवेकीराय
४१. रंग दर्शन - नेमीचंद जैन
४२. रंग कर्म और मीडिया - डॉ.जयदेव तनेजा
४३. हिन्दी : उदभव विकास और रुप - डॉ.हरदेव बाहरी
४४. हिन्दी ; भाषा स्वरश्प और विकास- डॉ.कैलाशचंद भटिया
४५. राजभाषा हिन्दी - डॉ.कैलाश चंद भाटिया
४६. प्रयोजन मूलक व्यावहारिक हिन्दी - डॉ ओमप्रकाश सिंहल
४७. प्रयोजन मूलक हिन्दी - विनोद गोदरे
४८. भाषा विज्ञान - भोलानाथ तिवारी
४९. पाश्चात्य काव्य शास्त्र के सिध्दांत - डॉ.शांति स्वरुप गुप्त
५०. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद शुक्ल
५१. हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियॉ - जयकिसन प्रसाद
५२. हिन्दी साहित्य का इतिहास - विजयपाल सिंह
५३. जयशंकर प्रसाद आचार्य नंददुलारे बाजपेयी
५४. प्रसाद का काव्य - डॉ.प्रेमशंकर
५५. कामायनी में काव्य संस्कृति और दर्शन - डॉ.द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
५६. पंत जी का नूतन काव्य और दर्शन - डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय
५७. रिचर्डस के आलोचक सिध्दांत - शंभुदत्त झा
५८. हिन्दी भाषा का इतिहास - लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
५९. सम सामायिक हिन्दी साहित्य - डॉ.बच्चन सिंह
६०. भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा - डॉ.विश्वदेव त्रिगुणायत
६१. भाषा विज्ञान सैध्दांतिक विवेचन - डॉ.रविन्द्र श्रीवास्तव
६२. भारतीय लिपियों की कहानी - गुणाकर मुले
६३. हिन्दी भाषा, राजभाषा और नागरीलिपी - डॉ.परमानंद पांचाल
६४. हिन्दी के विशिष्ट आलोचक - नंदकुमार राय
६५. भारतीय काव्य शास्त्र के नये क्षितिज - डॉ.राममूर्ति त्रिपाठी
६६. शैली विज्ञान - डॉ.विधानिवास मिश्र
६७. संरचानात्मक शैली विज्ञान - डॉ.रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव

६८. सौंदर्य शास्त्र के तत्व - डॉ.कुमार विमल

६९. रस सिध्दांत और सौंदर्य शास्त्र - निर्मला जैन

७०. सौदर्य शास्त्र - लक्ष्मण दत्त गौतम

७१. मार्क्सवादी सौदर्यशास्त्र - मॅनेजर पांडेय

७२. नई कहानी संदर्भ और प्रकृति - देवी शंकर अवस्थी

७३. समकालीन हिन्दी कहानी - डॉ.पुष्प पाल सिंह

७४. नई कहानी का स्वरुप विवेचन – डॉ.इन्दु रश्मि

७५. हिन्दी निर्गुण संत काव्य - डॉ.रमा शुक्ला. अनुसंधान केन्द्र मुरादाबाद

७६. डॉ.शंकर बुंदेले लिखीत समीक्षा कृति प्रेमचंद एवं रंगभूमि का जीवन दर्शन अमन प्रकाशन, कानपूर.

७७. उर्दु साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास- लेखक डॉ.एहतेशाम हुसेन, लोकभारती महात्मा गांधी इलाहाबाद.

७८. आधुनिक हिन्दी काव्य में व्यक्तिवादी प्रवृत्ती और आंचम का काव्य- लेखक डॉ. सुभाष पटनायक.

७९. राजभाषा हिन्दी विविध आयाम, लेखक डॉ. शंकर बुंदेले.

८०. संपादीत पुस्तक प्रयोजनमुलक हिन्दी और अनुवाद.

८१. समय के हस्ताक्षर एवं मध्यकाल के अनमोल रतन लेखक डॉ. ज्योती व्यास.

८२. कबीर और तुकाराम का सामाजिक दर्शन, डॉ. त्रिवेणी नारायण सोनोने.

*****

एम.ए.हिन्दी द्वितीय वर्ष

प्रश्नपत्र - १

आधुनिक काव्य

प्रस्तावना- आधुनिक हिन्दी काव्य पुनर्नवा के रुप मे नवीन भावभूमि एवं वैचारिक गतिशीलता लेकर अवतरित हुआ I आधुनिकतः, इहलौकिकता, विश्वजनीनता एवं वैज्ञानिक दृष्टोकोण इसकी प्रमुख विशेषताएँ है I उपेक्षित विषय भी यहाँ सार्थक एवं प्रासंगिक हो गए I उन्नसवी शती के उत्तरार्द्व से अद्यावधि तक की संवेदनाएँ, भावनाएँ एवं नूतन विचार सरणियाँ इसमें अभिव्यक्त हुई है I मुक्कमल मनुष्य इसमें अभिव्यंजित हुआ है I विविध धाराओं में प्रवहमान आधुनिक हिन्दी काव्य प्रेरणा और ऊर्जा का अजस्त्र स्त्रोत है I अंतः संवेदना तथा ज्ञान क्षितिज के विस्तार के लिए अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक है I

(क) पाठ्यविषय - व्याख्या एवं विवेचना के लिए निम्नलिखीत ६ कवियों का अध्ययन किया जायेगा -

१) मैथिलीशरण गुप्त - साकेत का नवम् सर्ग

२) जयशंकर प्रसाद - कामायनी - श्रध्दा, इडा और लज्जा सर्ग

३) सुर्यकांत त्रिपाठी निराला - राम की शक्ति पूजा, एवं जूही की कली

४) सुमित्रानंदनपंत - परिवर्तन, नौका विहार, एक तारा, मौन निमंत्रण, आ धरती कितना देती है

५) स.ही. वात्सायन 'अज्ञेय' - नदी के द्वीप, असाध्य वीणा, बावरा अहेरी

६) नागार्जुन की १० कविताएँ -

१) चंदु मैने सपना देखा
२) उनको प्रणाम
३) बादलों को चिरते देखा
४) घन कुरंग
५) बहुत दिनों के बाद
६) मेरी भी आभा है इसमें
७) मन करता है
८) अकाल और उसके बाद
९) अग्निबीज
१०) जान मर रहे है जंगल में (नागार्जुन प्रतिनिधी कविताएँ, राजकमल प्रकाशन)

(ख) द्रुतपाठ के लियें निम्नांकित १० कवियोंका अध्ययन किया जायेगा

१. श्रीधर पाठक
२. अयोध्यासिंह उपाध्यय 'हरिऔध'
३. जगन्नाथदास रत्नाकर
४. महादेवी वर्मा
५. हरिवंशराय बच्चन
६. गिरिजाकुमार माथुर
७. शमशेर बहादुर सिंह
८. धर्मवीर भारती
९. दुष्यंतकुमार
१०. जगदीश गुप्त

अंक विभाजन तीन व्याख्याएँ	3 x 10 = 30 अंक
दो आलोचनात्मक प्रश्न	2 x 15 = 30 अंक
पॉच लघुत्तर प्रश्न	5 x 4 = 20 अंक
वीस आणि लघुत्तरी / वस्तुनिष्ठ प्रश्न	20 x 1 = 20 अंक
	= कुल १०० अंक

प्रश्न १ 'क' विभाग के प्रत्येक कवि की कृति से १-१ व्याख्या इस प्रकार कुल छ. व्याख्याएँ पुछी जायेगी, जिनमे से ३ व्याख्याएँ करना अनिवार्य होगी I प्रत्येक व्याख्यापर १० अंक निर्धारित है I

3 x 10 = 30 अंक

प्रश्न २ 'क' विभाग के कवियोंपर ४ आलोचनात्मक प्रश्न पुछे जायेंगे जिनमें से २ प्रश्न हल करने होंगे I प्रत्येक प्रश्न १० अंक का होगा

2 x 15 = 30

प्रश्न ३ 'ख' विभाग के प्रत्येक कविपर १ - १ लघूत्तरी प्रश्न इस प्रकार कुल १० प्रश्न पुछे जायेंगे जिनमें से ५ प्रश्न हल करने होंगे I प्रत्येक प्रश्न के लिये ४ अंक निर्धारित है I 4 x 5 = 20

प्रश्न ४ संपूर्ण पाठ्यक्रम से २० प्रति लघूत्तरी / वस्तुनिष्ठ प्रश्न पुछे जायेंगे I प्रत्येक प्रश्न के लिये १ अंक होगा

20 x 1 = 20

एम.ए.हिन्दी द्वितीय वर्ष

प्रश्न पत्र - २

आधुनिक गद्य साहित्य

प्रस्तावनाः- आधुनिक काल में गद्य साहित्य को अभूतपूर्व सफलता मिली है I यह मानव -मन और मस्तिष्क की अभिव्यक्ति का सशक्त एवं अनिवार्य माध्यम बन गया है I मनुष्य का राग-विराग ,तर्क वितर्क तथा चिंतन - मनन जिस रागात्मकता के साथ कौशलपूर्ण ढंग से गद्य मे अभिव्यंजित होता है वैसा अन्य साहित्यांग में नही I आधुनिक काल में गद्य के विविध रुपों का विकास इस तथ्य का साक्षी है किं प्रौढ मन-मस्तिष्क की पूर्ण अभिव्यक्ति गद्य में ही संभव है I निबंध गद्य का प्रौढ - शक्तिशाली प्रतिरुप, उसकी वैयक्तिक एव स्वातंत्र्य चेतना का विश्वसनीय प्रतिनिधि है I नाटक, उपन्यास,कहानी तथा अन्य विविध विधाओं के रुप में गद्य साहित्य वामन से विराट बन गया है I आज मनुष्य को उसकी प्रकृति, परिवेश, परिस्थिति, तथा चिंतन की विकास-प्रक्रिया के साथ सहज प्रामाणिक रुप में गद्य के माध्यम से ही जाना जा सकता है I अतः इसका अध्ययन अनिवार्य है I

पाठ्यविषयः- व्याख्या एवं विवेचना के लिये ६ पुस्तकों का अध्ययन किया जायेगाः-

(क) १) चंद्रगुप्त - जयशंकर प्रसाद
२) आधे अधुरे - मोहन राकेश
३) महाभोज - मन्नू भंडारी
४) मैला ऑचल - फणीश्वरनाथ रेणू
५) निबंध निलय - संपादक आचार्य सत्येन्द्र वाणी प्रकाशन दिल्ली. बाळकृष्ण भट्ट आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ.रामविलास शर्मा,श्रीविद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ रॉय, डॉ.नगेन्द्र.
६) कथान्तर - संपादक - परमानंद श्रीवास्तव, राजकमल प्रकाशन दिल्लीः- चंद्रधर शर्मा गुलेरी, प्रेमचंद, जैनेन्द्र, धर्मवीर भारती, कमलेश्वर, उषा प्रियम्बदा (निर्मल) निर्मल वर्मा.

(ख) द्रुतपाठ के लिये निम्नांकित दस रचनाकारोंका अध्ययन किया जायेगा

१) लक्ष्मीनारायण मिश्र - नाटककार के रुप मे
२) शंकर शेष - नाटककार के रुप मे
३) भगवतीचरण वर्मा - उपन्यासकार के रुप मे
४) भीष्म साहनी - उपन्यासकार के रुप में
५) डॉ.नगेन्द्र - आलोचक के रुप में
६) श्यामसुंदर दास - आलोचक के रुप में
७) अज्ञेय - कहानीकार के रुप में

८) पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' - कहानीकार के रुप में
९) अमृतराय - जीवनीकार के रुप में
१०) हरिवंशराय बच्चन - आत्मकथाकार के रुप में

अंक विभाजन

तीन व्याख्याएँ	३ x १० = ३० अंक
दो आलोचनात्मक प्रश्न	२ x १५ = ३० अंक
पाँच लघूत्तरी प्रश्न	५ x ४ = २० अंक
वीस अति लघुत्तरी / वस्तुनिष्ठ प्रश्न	२० x १ = २० अंक
	कुल १०० अंक

प्रश्नपत्र का प्रारुप —

प्रश्न १ 'क' विभाग की प्रत्येक कृति से १-१ व्याख्या इस प्रकार कुल छः व्याख्याएँ पूछी जायेगी I जिनमें से ३ व्याख्याएँ करना अनिवार्य होगी प्रत्येक व्याख्यापर १० अंक निर्धारित है I

३ x १० = ३० अंक

प्रश्न २ 'क' विभाग की प्रत्येक कृतियोंपर चार आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से दो प्रश्न हल करने होंगे I प्रत्येक प्रश्न १५ अंक का होगा I

२ x १५ = ३० अंक

प्रश्न ३ 'ख' विभाग की प्रत्येक कृतिपर १-१ लघूत्तरी प्रश्न इस प्रकार कुल १० प्रश्न पूछे जायेंगे I जिनमें से ८ प्रश्न हल करने होंगे I प्रत्येक प्रश्न के लिये ४ अंक निर्धारित है

५ x ४ = २० अंक

प्रश्न ४ संपुर्ण पाठ्यक्रम से २० अतिलघूत्तरी / वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जायेंगे प्रत्येक प्रश्न के लिये १ अंक होगा I

२० x १ = २० अंक

एम.ए.(हिन्दी) भाग-२ प्रश्नपत्र - ३
भाषाविज्ञान एवं हिन्दी भाषा

प्रस्तावना साहित्य आद्यंत एक भाषिक निर्मिति है I साहित्य के गंभीर अध्ययन के लिए भाषिक व्यवस्था का सुस्पष्ट सर्वांगीण ज्ञान अपरिहार्य है I भाषाविज्ञान भाषा की वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रणाली के रुप में भाषिक इकाइयों तथा भाषा संरचना के विभिन्न स्तरो पर उनके अंतरसंबंधो के विन्यास को आलोकित कर न केवल अध्येता को भाषिक अंतर्दृष्टि देता है I अपितु भाषा-विषयक

विवेचन के लिए एक निरुपक भाषा भी प्रदान करता है I मूल भाषा व्यवस्था पर आरोपित द्वितीयक साहित्यिक व्यवस्था की भाषिक प्रकृति की स्वीकृति, प्राचीन भारतीय एवं अधुनातक पाश्चात्य साहित्य चिंतन में समान रुप से लक्षणीय है I कहने की आवश्यकता नहीं कि भाषा के साहित्येत्तर, प्रयोजनमूलक रुपों के अध्ययन में भी भाषा वैज्ञानिक चिंतन का लाभ उतना ही महत्वपूर्ण है I

भाषावैज्ञानिक आधार पर हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक विकासक्रम, भौगोलिक विस्तार, भाषिक स्वरुप, विविधरुपता तथा हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाओं विषयक जानकारी एवं देवनागरी के वैशिष्ट्य, विकास और मानकीकरण का विवरण हिन्दी के अध्येता के लिए अत्यंत उपयोगी है I

पाठ्यविषय :

(क) भाषा विज्ञान

१. भाषा और भाषाविज्ञान : भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण, भाषाव्यवस्था और भाषा-संरचना और भाषिक - प्रकार्य I भाषाविज्ञान : स्वरुप एवं व्यर्गप्त, अध्ययन की दिशाएँ - वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मकः
२. स्वन प्रक्रिया : स्वनविज्ञान का स्वरुप और शाखाएँ, वागवयव् और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनो का वर्गीकरण, स्वनगुण, स्वनिक परिवर्तन I स्वनिम विज्ञान का स्वरुप, स्वनिम की अवधारणा, स्वनिम के भेद, स्वनिमिक विश्लेषण I
३. व्याकरण : रुपप्रक्रिया का स्वरुप और शाखाएँ, रुपिम की अवधारणा और भेद : मुक्त - आबद्ध, अर्थदर्शी और संबंधदर्शी, संबंधदर्शी रुपिम के भेद और प्रकार्य I वाक्य की अवधारणा, वाक्य के भेद्, वाक्य-विश्लेषण, निकटस्थ-अवयव विश्लेषण, गहन-संरचना और बाह्य-संरचना I
४. अर्थविज्ञान : अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का संबंध, पर्यायता, अनेकार्थता, विलोमता, अर्थ परिवर्तन I
५. साहित्य और भाषा विज्ञान - साहित्य के अध्ययन में भाषाविज्ञान के अंगों की उपयोगिता

(ख) हिन्दी भाषा

१. हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ - वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ I मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ - पालि प्राकृत - शौरसेनी,अर्धमागधी, मागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँI आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण I

२. हिन्दी का भौगोलिक विस्तार : हिन्दी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाडी और उनकी बोलियाँ Iखडीबोली, ब्रज और अवधी की विशेषताएँ I

३. हिन्दी का भाषिक स्वरुप : हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था - खंड्य, खंड्येतर I हिन्दी शब्द रचना - उपसर्ग, प्रत्यय, समास I रुपरचना - लिंग, वचन और कारक-व्यवस्था के संदर्भ में हिन्दी के संज्ञा सर्वनाम, विशेषण और क्रियारुप I हिन्दी वाक्य-रचना : पदक्रम और अन्विति I

४. देवनागरी लिपी : विशेषताएँ और मानकीकरण I

५. हिन्दी के विविध रुप : संपर्क-भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा के रुप में हिन्दी, माध्यम-भाषा, संचार-भाषा, हिन्दी की सांविधानिक स्थिति I

६. हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाएँ : आंकडा-संसाधन और शब्द-संसाधन, वर्तनी-शोधक, मशीनी अनुवाद हिन्दी भाषा-शिक्षण I

अंक विभाजन :

भाषाविज्ञान (२ आलोचनात्मक प्रश्न) : २ x १५	= ३० अंक
हिन्दी भाषा (२ आलोचनात्मक प्रश्न) : २ x १५	= ३० अंक
५ लघूत्तरी प्रश्न ५ x ४	= २० अंक
२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न २० x १	= २० अंक
	= कुल अंक १००

प्रश्नपत्र का स्वरुप :-

प्रश्न - १ (क) विभाग (भाषाविज्ञान) की चार इकाइयों में से चार प्रश्न I प्रत्येक इकाई में से एक आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे I जिनमें से दो प्रश्न हल करने होंगे I २ x १५ = ३० अंक

प्रश्न-२ (ख) विभाग की प्रथम चार इकाइयों में से प्रत्येक से एक प्रश्न इस प्रकार कुल चार प्रश्न पुछे जाएंगे जिनमें से दो प्रश्न हल करने होंगे I
२ x १५ = ३० अंक

प्रश्न - ३ संपूर्ण पाठ्यक्रम से दस लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से पाँच प्रश्न हल करने होंगे I ५ x ४ = २० अंक

प्रश्न - ४ संपूर्ण पाठ्यक्रम से २० वस्तुनिष्ठ / अतिलघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे I
२० x १ = २० अंक

एम.ए.(हिन्दी) भाग-२ प्रश्नपत्र - ४ निबंध / परियोजना

(अ) **निबंध :-**

इस प्रश्नपत्र कें एम.ए.(हिन्दी) भाग-१ एवं भाग-२ के शेष सभी सात प्रश्नोपत्रों के पाठ्यक्रम के आधार पर दस विषय दिए जाएंगे जिनमें से किसी एक विषय पर तीन घंटे का निबंध लिखना होगा जिसके लिए सौ अंक होंगे I

(आ) **विनिबंध -**

हिन्दी साहित्य अथवा हिन्दी भाषा से संबंधित किसी एक विषय को आधार बनाकर विद्यार्थी एक परियोजना प्रस्तुत करेगा I विद्यार्थी अपनी परियोजना किसी ऐसे प्राध्यापक के मार्गदर्शन में संपन्न करेगा जिसे कमसे कम पांच वर्षो का अध्यापन अनुभव हो I यह परियोजना लगभग १०० पृष्ठो की होगी I १५ मार्च तक इस परियोजना की दो प्रतियाँ विद्यापीठ को प्रस्तुत करना होगा I इसके लिए १०० अंक होंगे I अंक विभाजन निम्नानुसार होगा -

विनिबंध लेखन - ६० अंक

मौखिकी - ४० अंक

(इ) लघुशोध प्रबंध (Disseration)

लघुशोध प्रबंध हेतु निर्देश

१) लघुशोध प्रबंध प्रस्तुत करने वाले विद्यार्थी को एम.ए.भाग-१ परीक्षा में कम से कम ५५ऽ अंक प्राप्त करना आवश्यक होगा।

२) प्रश्न पत्र चार के अन्तर्गत लघुशोध प्रबंध के लिये ६० अंक लेखन के लिये और मौखिकी के लिये ४० अंक होंगे।

३) लघुशोध प्रबंध लेने वाले विद्यार्थी को मार्गदर्शक स्वीकृति के लिये अपना आवेदन विद्यापीठ के ३१ अगस्त (ग्रीष्म परीक्षा के लिये) तथा १५ जून (शीत परीक्षा के लिये) के पूर्व ही भेजना होगा।

४) जिन प्राध्यापकों ने आचार्य पदवी प्राप्त कर ली हो या जिन्हें पांच वर्ष का स्नातकोत्तर कक्षाओं के पढाने का अनुभव हो अथवा जिन्हें सात वर्षों का स्नातक कक्षाओं के पढाने का अनुभव हो उन्हें मार्गदर्शन की स्वीकृती मिल सके।

५) एक परीक्षा के लिये एक मार्गदर्शक के पास पांच शोधार्थी से अधिक नही होना चाहिये।

६) महाराष्ट्र विश्वविद्यालय एक्ट १९९४ की धारा ३६(A)(६) के अन्तर्गत दर्शाई गई कार्यवाही लघुशोध प्रबंध पर लागू होगी।

7) ग्रीष्मकालीन परीक्षा के लिये १५ मार्च तथा शीतकालीन परीक्षा के लिये १५

अक्टुंबर तक अपने लघुशोध प्रबंध विद्यापीठ में जमा कराना होगा। उसपर मार्गदर्शक का प्रमाणपत्र अत्यन्त आवश्यक है।

८) लघुशोध प्रबंध की २ प्रतियाँ विद्यापीठ में जमा करानी होगी। लघुशोध प्रबंध लगभग १०० पृष्ठों का हो लघुशोध प्रबंध टंकित अथवा सुवाच्च अक्षरों मे होना आवश्यक है।

९) किसी एक परीक्षक के पास पाँच से अधिक लघुशोध प्रबंध नही भेजे जाये।

१०) शोध प्रबंध विषय की सम्पूर्ण जानकारी अत्यन्त गोपनीय रखना आवश्यक है एवं आवश्यकता पडने पर उसे प्रबंध समितीके सामने प्रस्तुत किया जा सके।

११) लघुशोध प्रबंध के सभी अधिकार अमरावती विश्वविद्यालय के पास ही रहेंगे।

सहाय्यक ग्रंथ सूची

१) कबीर और जायसी - पुरुषोत्तम बाजपेयी

२) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य विधाएँ - बापूराव देसाई

३) नयी कविता : एक मूल्यांकन - शंभूदत्त पाण्डेय

४) प्रेमचंद और उनकी उपन्यास कला - रघुवर दयान

५) मुक्तिबोध कविता और जीवन - चंद्रकांत देवताले

६) अज्ञेय - निर्मला शर्मा

७) तुलसी के अध्ययन की नई दिशाएँ - रामप्रसाद मिश्र

८) दुष्यंतकुमार और नई कविता - विनय सिंह

९) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' भाषबोध के आयाम - विजयलक्ष्मी सालोदिया

१०) धर्मवीर भारती की साहित्य साधना - पुष्पा भारती

११) भाषा विज्ञान एवं समान भाषाविज्ञान - गिरीष परदेशी

१२) भाषा और भाषाविज्ञान - तेजपाल चौधरी

१३) मुक्तिबोध की काव्यभाषा - सनतकुमार

१४) महादेवी का काव्य वैभव - रमेशचंद्र गुप्त

१५) पंत के काव्य में कल्पना और कर्तुत्व - बिजरानी भार्गव

१६) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी व्यक्तित्व एवं साहित्य - गणपतिचंद्र गुप्त

१७) समकालीन हिन्दी कवित्व : अज्ञेय और मुक्तिबोध है संदर्भ में भवदेव पाण्डेय

१८) भीष्म साहनी : उपन्यास साहित्य - राजेश्वर सक्सेना

१९) राहुल साँकृत्यायन : सृजन और संघर्ष - जगतसिंह

२०) निराला काव्य मे विविध आयाम - डॉ.इन्द्रराज सिंह

२१) साहित्य में गद्य की विविध विधाएँ - डॉ.कैलाशचंद्र भाटिया

२२) हिन्दी निबंध के आधारस्तंभ - प्रो. हरिमोहन

२३) प्रतिनिधि हिन्दी निबंधकार - प्रो.हरिमोहन

२४) आचार्य रामचंद्र शुक्ल निबंध संरचना - योगेश प्रताप सिंह

२५) मैला ऑचल : शिल्प और दृष्टि - बद्रीप्रसाद

२६) अंधेरे में एक विश्लेषण - डॉ.विजयपाल सिंह

२७) छाया वादोत्तर हिन्दी कविता (एक अंतरयात्रा) लेखिका डॉ.मधुबाला सान्याल प्रकाशन ग्रंथायन सर्वोदय नगर, अलीगढ.

*****